संशोधित पाठ्यक्रम एम.ए. हिन्दी (संस्थागत) वर्ष 2019-20 से प्रभावी

सेमेस्टर प्रथम :-

1. पाठ्यक्रम प्रथम - हिन्दी साहित्य का इतिहास
2. पाठ्यक्रम द्वितीय - प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य
3. पाठ्यक्रम तृतीय - नाटक और रंगमंच
4. पाठ्यक्रम चतुर्थ - प्रयोजन मूलक हिन्दी

सेमेस्टर द्वितीय :-

5. पाठ्यक्रम प्रथम - उत्तर माध्यकालीन काव्य
6. पाठ्यक्रम द्वितीय - कथा साहित्य
7. पाठ्यक्रम तृतीय - वैकल्पिक प्रश्न पत्र
   कथेत्तर गद्य साहित्य
   अथवा
   विशिष्ट रचनाकार (कोई एक)
   क 1. सूरदास
   ख 2. गोस्वामी तुलसीदास
   ग 3. जयशंकर प्रसाद
   घ 4. प्रेमचंद
   ङ 5. अज्ञेय
8. पाठ्यक्रम चतुर्थ - भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

सेमेस्टर तृतीय :-

9. पाठ्यक्रम प्रथम - आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यन्त)
10. पाठ्यक्रम द्वितीय - काव्य शास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य)
11. पाठ्यक्रम तृतीय - पत्रकारिता प्रशिक्षण
12. पाठ्यक्रम चतुर्थ - प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी (पाठ्यक्रम पर आधारित)

सेमेस्टर चतुर्थ :-

13. पाठ्यक्रम प्रथम - छायावादोत्तर काव्य
14. पाठ्यक्रम द्वितीय - हिन्दी आलोचना
15. पाठ्यक्रम तृतीय - वैकल्पिक प्रश्नपत्र (कोई एक)
   क. विशिष्ट साहित्यधारा (भारतीय साहित्य)
   ख. विशिष्ट साहित्यधारा (कौरवी लोक साहित्य)
   ग. विशिष्ट साहित्यधारा (प्रवासी हिन्दी साहित्य)
   घ. विशिष्ट साहित्यधारा (प्राचीन भाषा साहित्य)(संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश)
   ड. लघु शोध प्रबन्ध

संस्थागत पाठ्यक्रम शिक्षण हेतु सामान्य निर्देश

1. आंतरिक एवं बाह्य परीक्षाएं क्रमशः 50-50 अंकों की होंगी।

2. आन्तरिक मूल्यांकन सतत् कक्ष शिक्षण के क्रम में प्रत्येक सत्र में निम्नानुसार होगा-

   1- दो सत्र परीक्षाएं, 30 अंक

   2- संगाष्ठी पत्र लेखन, प्रस्तुतीकरण 10 अंक

   3- क्विज टेस्ट, पुस्तकालय कार्य, गृहकार्य मूल्यांकन 10 अंक

3. संबंधित परीक्षाओं में सभी इकाइयों (यूनिट) से अनिवार्यतः प्रश्न पूछे जाएंगे। शिक्षण इकाइयों (यूनिट) के क्रम में ही कराया जाएगा (जिससे आन्तरिक परीक्षा के लिए सुविधा रहेगी)।

4. आन्तरिक परीक्षा हेतु शिक्षण में आधार सामग्री, आलोचनात्मक सामग्री, शोध पत्र-पत्रिकाओं, साहित्यक एवं आलोचनात्मक पत्रिकाओं पर आधारित अध्ययन कराया जाएगा।

5. आन्तरिक परीक्षाओं हेतु प्रश्नपत्र से संबंधित शोध पत्रों को अध्ययन में शामिल करना होगा, इसके लिए इस प्रश्न पत्र से संबंधित कम से कम दो शोध पत्रों को छात्र-छात्राओं को सन्दर्भ के रूप में समझाया जाए तथा अध्ययन सामग्री में शामिल किया जाए।

6. बाह्य परीक्षा के प्रश्नपत्रों में पूछे जाने वाले अंक निर्धारण का प्रारूप प्रत्येक पाठ्क्रम के अंत में दिया गया है। बाह्य परीक्षा के प्रश्न पत्र तदनुरूप रहेंगे। आंतरिक परीक्षाओं में बाह्य परीक्षा के प्रश्नपत्रों के प्रारूप से विद्यार्थियों का परिचय हो जाना चाहिए।

7. प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी हेतु वर्ष में प्रकाशित साहित्यिक पुस्लकों-पत्रिकाओं, शोध पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख/साहित्यिक गतिविधियों, साहित्यिक संस्थाओं की गतिविधियों पर आलेख/प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रयोग/भाषा विज्ञान एवं राजभाषा के प्रयोग/पत्रकारिता संबंधी विषयों में प्रयोग, शब्दकोश निर्माण संबंधी प्रयोग/अनुवाद संबंधी प्रयोंग शामिल होंगे। विद्यार्थी को उक्त में से कम से कम दो गतिविधियों में शामिल रहना होगा तथा संबंधित विषय पर कम से कम 10 पृष्ठों का एक आलेख विभाग में प्रस्तुत करना होगा।

8. प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी संबंधी मूल्यांकन आन्तरिक तथा बाह्य परीक्षक द्वारा किया जाएगा और संबंधित प्रश्न भी छात्र-छात्राओं से पूछे जाएंगे। विषय का निर्धारण समयावधि को देखते हुए संबंधित आन्तरिक शिक्षक द्वारा किया जाएगा और समय सारिणी में मौखिकी का अन्य प्रश्नपत्रों की भांति निर्धारण होगा और अनिर्वायतः तत्संबंधित विषय पर कक्षाएं कराई जाएंगी।

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम प्रथम)
हिन्दी साहित्य का इतिहास

एम0ए0 हिन्दी के विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य तथा हिन्दी पद्य का समेकित अध्ययन करना अपेक्षित है। अध्ययन की इस प्रक्रिया में उन्हें हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विविध विचाराधाराओं, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, कवियों तथा उनकी रचनाओं की जानकारी अवश्यक है। साथ ही सभी युगों के नामकरण, काल विभाजन के संदर्भ में कौन-कौन से बिन्दुओं को ध्यान में रखा गया तथा किन आधारों पर नामकरण किया गया इसकी जानकारी भी होनी चाहिए। इन्हीं सब आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हिन्दी साहित्य के इतिहास के पाठ्यक्रम का अध्ययन आवश्यक है।

इकाई 1

हिन्दी साहित्य का काल विभाजन एवं नामकरण, हिन्दी साहित्य के इतिहास के लेखन की परम्परा।

इकाई 2

आदिकाल की पृष्ठभूमि, (नाथ, सिद्ध और जैन साहित्य) रासो काव्य एवं फुटकर लौकिक साहित्य (विद्यापति और अमीर खुसरो)

इकाई 3

भक्तिकाल की परिस्थितियाँ, भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और प्रमुख धाराएँ (संत काव्यधारा, सूफी काव्यधारा, कृष्ण भक्ति काव्य और राम भक्ति काव्य)

रीतिकालीन कविता की परिस्थितियां, प्रमुख प्रवृत्तियां, धाराएँ (रीति सिद्ध, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त)

इकाई 4

आधुनिक साहित्य की परिस्थितियां, विचाराधाराएं, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता।

इकाई 5

आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य की प्रमुख विद्याओं का परिचय, निबन्ध, उपन्यास, कहानी, नाटक एवं अन्य गद्य विधाएं (संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, यात्रावृतान्त)

निबन्धात्मक/आलोचनात्मक प्रश्न	2 X 15	=	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2	=	10 अंक
अतिलघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2	=	10 अंक
योग		=	50 अंक

नोट :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहु विकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम द्वितीय)
प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य

हिन्दी के आदिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि में अपभ्रंशा का बड़ा योगदान है। आदिकालीन काव्य, प्रबंध, मुक्तक आदि अनेक काव्य रूपों में रचा गया है तथा इसकी अभिव्यंजना अपभ्रंश, अवहटठ तथा देशी भाषा में की गई है। इस साहित्य ने परवर्ती कालाओं को प्रभारित करने में सक्रिय तथा सक्षम भूमिका का निर्वाह किया है। अतः परवर्ती काल के साहित्य का अध्ययन किए बिना इस काल के साहित्य का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। पूर्व मध्यकालीन (भक्तिकालीन) साहित्य लोक-जागरण और लोक-मंगल से परिपूरित था। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उस समय के साहित्य में भाषा तथा कला के सौन्दर्य को परखने तथा समाज और संस्कृति को जानने के लिए आदिकालीन व भक्तिकालीन कविता का अध्ययन आवश्यक है।

(इस पाठयक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1 चंबरदायी-पद्मावती समय, संपादितः हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं नामवीर सिंह।

इकाई 2 कबीर : कबीर ग्रन्थावली-संपादक, डॉ0 श्यामसुन्दर दास-50 साखियां (प्रारंभिक)

इकाई 3 मलिक मुहम्मद जायसी - पद्मावत - संपादक - आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागमती वियोग खण्ड।
सूरदास- भ्रमरगीत सार - संपादक - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
7, 8, 23, 30, 41, 42, 52, 57, 64, 69, 70, 85, 90, 94, 97, 101, 104, 105, 116, 134, 136, 143, 155, 166, 186, 194, 210, 220, 221

इकाई 4 तुलसीदास : राचरित मानस, गीता प्रेस (उत्तराखण्ड के आरंभिक 40 दोहे तथा चौपाइयां)

इकाई 5 **द्रुतपाठ :-**
विद्यापति, अमीर खुसरा, नानक, गोरखनाथ, मीराबाई, रैदास, कुंभनदास।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे। जो उनके साहित्यिक परिचय से संबंधित प्रश्न होंगे। निबन्धात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों से नहीं पूछे जायेंगे।

व्याख्या	2 X 7 ½	=	15 अंक
निबन्धात्मक प्रश्न	1 X 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2	=	10 अंक
अतिलघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1	=	10 अंक
योग		=	50 अंक

नोट :- 1. प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से दो व्याख्या करनी होंगी।
2. व्यायाख्याएं चंदवरदायी, कबीर, जायसी, सूरदास एवं तुलसीदास के चयनित काव्य में से पूछी जाएगी। निबन्धात्मक प्रश्न उक्त कवियों पर आधारित होंगे।
3. लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहु विकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम तृतीय)
नाटक और रंगमंच

नाटक साहित्य की महत्वपूर्ण तथा प्राचीन विधा है। आचार्य भरत के नाट्य चिन्तन से लेकर आधुनिक भारतीय तथा पाश्चात्य नाट्य चिन्तन के प्रसिद्ध चिन्तकों का अध्ययन नाटक के स्वरूप को समझने के लिए आवश्यक है। नाटक यथार्थ एवं कल्पना के मेलजोल से विलक्षण रूप धारण कर दृष्टा एवं पाठक दोनों को मनोरंजन तो प्रदान करता ही है साथ ही साथ अपने साध्य में दृश्य होने के कारण रंगमंच से भी सीधे जुड़ा हुआ है। हिन्दी नाटक में ऐतिहासिकता के साथ-साथ जीवन की विसंगतियाँ और विद्रूपताएं भी दृष्टिगत होती हैं। इन सबको जानने-समझने के लिए इस विधा का अध्ययन आवश्यक है।

इकाई 1

नाटक तथा रंगमंच का स्वरूप।

नाट्य भेद-भारतीय रूपक-उपरूपकों के भेद (सामान्य परिचय)

इकाई 2

नाट्य विधान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाट्य तत्वों का विस्तृत विवेचन।

रंगमंच के प्रमुख प्रकार, रंगशिल्प, रंग सम्प्रेषण के विविध घटक (मूर्त एवं अमूर्त)

रंगमंच-लोक नाट्य, संस्थाएं), (पारसी, पृथ्वी थियेटर, इप्टा, और नुक्कड़ नाटक।

नाटकों का अध्ययन

इकाई 3	1.	अंधेर नगरी	-	भारतेन्दु हरिश्चंद्र
	2.	चन्द्रगुप्त	-	जयशंकर प्रसाद
इकाई 4	3.	लहरों के राजहंस	-	मोहन राकेश
	4.	अंधायुग	-	धर्मवीर भारती

इकाई 5 **एकांकी**

एक घूंट - जयशंकर प्रसाद, चारुमित्रा - राजकुमार वर्मा

अण्डे के छिलके - मोहन राकेश आखिरी आदमी - धर्मवीर भारती

द्रुतपाठ :-

लक्ष्मी नारायण लाल, रामकुमार वर्मा, उदयशंकर भट्ट, जगदीशचन्द्र माथुर, सुरेन्द्र वर्मा, शंकर शेष, हबीब तनवीर।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे। जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से संबंधित सामान्य प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या -	$2 \times 7\frac{1}{2}$	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न -	1 x 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न -	5 x 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न -	10 x 1	=	10 अंक
योग		=	50 अंक

नोटः- 1. प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।

2 :- इकाई 01, 02 एवं 05 से निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। इकाई 03 एवं 04 से व्याख्या एवं निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

3 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

~~संदर्भ ग्रन्थ :- नाटक और रंगमंच~~

सेमेस्टर प्रथम (पाठ्यक्रम चतुर्थ)

प्रयोजनमूलक हिन्दी

आज हिन्दी का प्रयोग साहित्य, सृजनात्मक लेखन के साथ-साथ कार्यालय, पत्रकारिता, कम्प्यूटर तथा अनुवाद के क्षेत्र में भी अधिकाधिक हो रहा है। कार्यालयी हिन्दी की संरचना साहित्यिक हिन्दी तथा सृजनात्मक हिन्दी से अलग है। इसी तरह इन्टरनेट तथा अनुवाद में हिन्दी का स्वरूप अलग है। हिन्दी के इन विविध रूपों का अध्ययन करना हिन्दी के आधुनिक स्वरूप को जानने, समझने के लिए आवश्यक है। इस प्रक्रिया में कार्यालयी हिन्दी के औपचारिक लेखन के स्वरूप का अध्ययन अपेक्षित है, साथ ही, अनुवाद के विविध रूप, प्रक्रिया एवं प्रविधि तथा उनके क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी के लिए यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

इकाई 1 **कामकाजी हिन्दी** : हिन्दी के विभिन्न रूप-सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राज भाषा, माध्यम भाषा, मातृ भाषा, कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण, पत्र लेखन, टिप्पण, संक्षेपण, पल्लवन।

इकाई 2 जनसंचार माध्यमों के लिए हिन्दी लेखन, रिपोर्ट-लेखन, संपादकीय, अग्रलेख, लघु टिप्पणियाँ।

इकाई 3 फीचर लेखन, विविध दैनिकों, रेडियो चैनलों, इंटरनेट, मोबाइल, फिल्मों, टीवी चैनलों में प्रयुक्त हिन्दी का स्वरूप, जनसंपर्क एवं विज्ञापनों में हिन्दी।

इकाई 4 **हिन्दी कम्प्यूटिंग**

कम्प्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र, वेब-पब्लिशिंग का परिचय।

इण्टरनेट सम्पर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख-रखाव एवं इण्टरनेट समय मितव्ययता के सूत्र, वेब-पब्लिशिंग, इण्टरनेट एक्सप्लोरर अथवा नेटस्केप, लिंक, ब्राउजिंग, ई-मेल भेजना/प्राप्त करना

इकाई 5 **अनुवाद**

अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि, कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद।

अनुवाद का अन्य क्षेत्र : वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, विधि, साहित्य, कार्यालयी।

निबंधात्मक प्रश्न 2 x 15	= 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न 5 x 2	= 10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न 10 x 1	= 10 अंक
योग	**= 50 अंक**

नोट :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रन्थ :- प्रयोजनमूलक हिन्दी

1	प्रयोजनमूलक हिन्दी	- विनोद गोदरे
2	प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और प्रयोग	- दंगल झाल्टे
3	टिप्पणी प्रारूप	- शिवनारायण चतुर्वेदी
4	प्रालेखन प्रारूप	- शिवनारायाण चतुर्वेदी
5	राजभाशा विविधा	- माणिक मृगेश
6	व्यावसायिक हिन्दी	- रहमतुल्लाह
7	पत्र-व्यवहार निर्देशिका	- भोलानाथ तिवारी, विजय कुलश्रेष्ठ
8	प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ पठन	- भोलानाथ तिवारी
9	व्यावहारिक हिन्दी और स्वरूप	- कृष्ण कुमार गोस्वामी
10	प्रयोजनमूलक हिन्दी	- (संपा0) कृष्ण कुमार गोस्वामी

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम प्रथम)

उत्तर मध्यकालीन काव्य

जीवन के इहलौकिक पक्ष का संज्ञान भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि पारलौकिकता का द्वार यहीं से खुलता है। चार पुरूषार्थ में काम का एक स्तम्भ होना गहरे अर्थ की व्यंजना करता है जैसे काम और कला घनीभूत भाव से जुड़े हैं, वैसे ही रति और रीति भी। जहाँ 'रति' मानव हृदय की मूल प्रवृत्ति है, वहीं 'रीति' उसे मनोवांछित अभिव्यंजना देती है। हिन्दी साहित्य का रीतिकाल इन्हीं मनोवृत्तियों से जुड़ा हुआ है। तद्‌युगीन परिस्थितियों के कारण प्रेम के श्रृंगारिक रूप की संपृक्ति बढ़ी। रसिकता और शास्त्रीयता का सुखद संयोग घटित हुआ। जीवन के मधुर पक्ष को भी ठीक से समझने के लिए रीति अथवा श्रृंगारकाल का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1	बिहारी	40 प्रारम्भिक दोहे	(बिहारी बोधिनी, संपा0 लाला भगवानदीन)
इकाई 2	घनानंद	25 प्रारम्भिक कवित्त	(घनानंद कवित्त, संपा0 विश्वनाथ प्रताप मिश्र)
इकाई 3	केशवदास	25 प्रारम्भिक कवित्त	(रामचन्द्रिका से)
इकाई 4	भूषण	15 प्रारम्भिक दोहे	(भूषण ग्रंथावली संपा0 डॉ0 भगीरथ दीक्षित)

इकाई 5 द्रुतपाठ

देव, रसखान, सेनापति, पद्‌माकर, मतिराम, गिरधर कविराय, गुरू गोविंद सिंह।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या	-	$2 \times 7\frac{1}{2}$	= 15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 X 15	= 15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 X 2	= 10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 X 1	= 10 अंक
योग			= 50 अंक

नोट 1:- 1. प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।

2 :- व्याख्याएँ बिहारी, घनानंद, केशवदास एवं भूषण के चयनित काव्य में से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न उक्त कवियों पर आधारित होंगे।

3 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम द्वितीय)

कथा-साहित्य

हिन्दी गद्य की विधाओं में कहानी एवं उपन्यास सर्वाधिक विकसित तथा लोकप्रिय है। सम्प्रति उसने शास्त्र का रूप धारण कर लिया है, अतः इस विधा का विस्तृत अध्ययन अपेक्षित है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1

उपन्यास एवं कहानी का स्वरूप, इतिहास, प्रमुख शैलियाँ, हिन्दी के प्रतिनिधि उपन्यासकारों एवं कहानीकारों का वस्तु शिल्पगत वैशिष्ट्य।

इकाई 2

1.	गोदान	- प्रेमचंद
2.	मैला आंचल	- फणीश्वर नाथ 'रेणु'

इकाई 3

1.	बाणभट्ट की आत्मकथा	- हजारी प्रसाद 'द्विवेदी'

इकाई 4

हिन्दी कहानी

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (उसने कहा था), जयशंकर प्रसाद (पुरस्कार), प्रेमचन्द (कफन), निर्मल वर्मा (परिन्दे), गिरिराज किशोर (अन्तर्दाह), से0 रा0 यात्री (टापू पर अकेले)।

इकाई 5 द्रुतपाठ

अमृतलाल नागर, श्रीलाल शुक्ल, शैलेश मटियानी, कृष्णा सोबती, मृणाल पाण्डेय, चित्रा मुद्गल, मन्नू भण्डारी।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्याएँ	-	$2 \times 7 \frac{1}{2}$	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 x 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 x 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 x 1	=	10 अंक
योग	-		=	50 अंक

<u>नोट 01:-</u> प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।

02 :- व्याख्याएँ इकाई संख्या 02, 03 से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न इकाई संख्या 01, 02, 03 एवं 04 से पूछे जाएंगे।

03 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम तृतीय)
कथेतर गद्य साहित्य

हिन्दी साहित्य की विधाओं में कथा साहित्य एवं नाट्य के अतिरिक्त सृजनधर्मी रचनाकारों द्वारा लिखित अन्य विधाओं का अध्ययन भी अपेक्षित है। यह प्रश्नपत्र इसी कमी को पूरा करता है जिसमें साहित्य की कई नवीन विधाओं का अध्ययन होगा।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1

निबंध : श्रद्धा-भक्ति - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
देवदारू - हजारी प्रसाद द्विवेदी
मेरे राम का मुकुट भीग रहा है - विद्यानिवास मिश्र
निशाद बांसुरी - कुबेरनाथ राय

इकाई 2

व्यंग्य : हरिशंकर परसाई - इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर
शरद जोशी - होना कुछ नहीं का
श्रीलाल शुक्ल - कुत्ते और कुत्ते
रवीन्द्र नाथ त्यागी - एक दीक्षांत भा-ाण

इकाई 3

रेखाचित्र : दस तस्वीरें - जगदीश चन्द्र माथुर

इकाई 4

घुमक्कड़ शास्त्र - राहुल सांकृत्यायन

इकाई 5 द्रुतपाठ :

महावीर प्रसाद द्विवेदी, कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर', पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', डॉ0 नगेन्द्र, ज्ञान चतुर्वेदी, ओम प्रकाश वाल्मीकि।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके साहित्यिक परिचय से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या	-	2 x 7 ½	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 x 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 x 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 x 1	=	10 अंक
योग			=	50 अंक

नोट 01:- प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।
02 :- व्याख्याएँ इकाई संख्या 01 से 02 तक में से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न उक्त रचनाकारों पर आधारित होंगे।
03 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

<u>सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम तृतीय)</u>
<u>विशिष्ट रचनाकार (कोई एक)</u>

हिन्दी के उन कालजयी रचनाकारों का अध्ययन करना आवश्यक है, जिन्होंने चिंतन और सर्जन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया है और जिनका लेखन आज भी प्रासंगिक है। अतः इन रचनाकारों की साहित्यिक दृष्टि को समझना आवश्यक है।

कबीरदास

पाठ्यग्रंथ : (क) कबीर ग्रन्थावली - सं0 डॉ0 श्यामसुन्दर दास

सहायक ग्रंथ :

1 कबीर - हजारी प्रसाद द्विवेदी।
2 कबीर दर्शन - रामजीलाल सहायक।
3 कबीर : एक नई दृष्टि - डॉ0 रघुवंश।
4 कबीर का रहस्यवाद - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी।
5 हिन्दी संत काव्यों में परम्परा और प्रयोग - डॉ0 भगवान देव पाण्डेय।
6 कबीर एक अनुशीलन - डॉ0 रामकुमार वर्मा।
7 कबिरा खड़ा बाजार में - भीष्म साहनी।
8 कबीर का रहस्यवाद - रामकुमार वर्मा।
9 कबीर - सं0 विजयेन्द्र स्नातक।

सूरदास

पाठ्यग्रंथ : सूरसागर - सार (संपूर्ण) - सं0 डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, नवीन संस्करण।

सहायक ग्रंथ :-

1 सूरदास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2 सूर-साहित्य - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।
3 अ-टछाप और वल्लभ संप्रदाय - डॉ0 दीनदयाल गुप्ता।
4 सूर और उनका साहित्य - डॉ0 हरिवंश लाल शर्मा।
5 हिन्दी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका - डॉ0 रामनरेश वर्मा।
6 सूरदास और कृष्ण भक्ति काव्य - डॉ0 मैनेजर पाण्डेय।
7 सूरदास - नंददुलारे वाजपेयी।
8 हिन्दी कृष्णभक्ति साहित्य - मधुर भाव की उपासना - प्रो0 पूर्णमासी राय।
9 मीरा का काव्य - डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी।
10 मीराबाई - डॉ0 श्रीकृष्ण लाल।
11 भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य - मैनेजर पाण्डेय।

गोस्वामी तुलसीदास

पाठ्यग्रंथ :

1 रामचरित मानस (अयोध्याकाण्ड - संपूर्ण) 326 दोहा)
2 कवितावली - (केवल उत्तरकाण्ड, कुल 183 छंद)
3 विनय पत्रिका - चुने हुए कुल 51 पद (पद संख्या :- 1, 3, 4, 5, 17, 30, 36, 41, 45, 72, 73, 76, 78, 79, 85, 88, 89, 90, 94, 97, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 111, 113, 114, 115, 121, 124, 155, 156, 158, 159, 160, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 169, 172, 174, 185, 198, 201, 272)।

सहायक ग्रंथ :–

1 गोस्वामी तुलसीदास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2 तुलसीदास – डॉ0 माताप्रसाद गुप्त।
3 मानस दर्शन – डॉ0 श्रीकृष्णलाल।
4 तुलसी और उनका युग – डॉ0 राजपति दीक्षित।
5 तुलसी की जीवन भूमि – चन्द्रबलि पाण्डेय।
6 रामकथा का विकास – कामिल बुल्के हिन्दी परिषद्, प्रयाग
7 मानस की रूसी भूमिका (हिन्दी अनुवाद) – वारान्निकोव, विद्यामंदिर, लखनऊ
8 सन्त तुलसीदास और उनका संदेश – डॉ0 राजपति दीक्षित।
9 गोस्वामी तुलसीदास की दृष्टि में नारी और उसका महत्व – डॉ0 ज्ञानवती त्रिवेदी।
10 लोकवादी तुलसी – डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी।
11 तुलसीदास – ग्रियर्सन।
12 तुलसी – उदयभानु सिंह
13 तुलसी सन्दर्भ – डॉ0 नगेन्द्र

जयशंकर प्रसाद

पाठ्य ग्रंथ :

1 कामायनी (सम्पूर्ण)
2 ध्रुवस्वामिनी
3 कहानी : आकाशदीप, गुंडा, देवरथ।
4 काव्य कला तथा छायावाद और यथार्थ (प्रथम निबन्ध और अन्तिम निबन्ध)

सहायक ग्रंथ :–

1 जयशंकर प्रसाद – आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी।
2 नया साहित्य : नये प्रश्न – आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी।
3 जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला – डॉ0 रामेश्वर खण्डेलवाल।
4 प्रसाद और उनका साहित्य – विनोद शंकर व्यास।
5 प्रसाद का काव्य – डॉ0 प्रेमशंकर।
6 प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा।
7 प्रसाद के जीवन और साहित्य – डॉ0 रामरतन भटनागर।
8 हिन्दी नाटक – डॉ0 बच्चन सिंह।
9 प्रसाद का गद्य साहित्य – डॉ0 राजमणि शर्मा।
10 प्रसाद : दुखान्त नाटक – रामकृष्ण शुक्ल श्रीमुख।
11 नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान – डॉ0 वशिष्ठनागर त्रिपाठी।
12 प्रसाद साहित्य में अतीत चिन्तन – डॉ0 धर्मपाल कपूर
13 कामायनी का पुनर्मूल्याकन – रामस्वरूप चतुर्वेदी
14 प्रसाद साहित्य सर्जना के आयाम – माधरी सुबोध (संपादक)
15 प्रसाद सन्दर्भ – प्रमिला शर्मा (संपादक)

प्रेमचंद

(क) रंगभूमि (ख) प्रेमाश्रम
(ग) गबन (घ) मानसरोवर (खण्ड एक)

सहायक ग्रंथ

1 प्रेमचंद – घर में – शिवरानी देवी।

2 प्रेमचंद : एक विवेचन – इन्द्रनाथ मदान।
3 प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा।
4 प्रेमचंद : कलम का सिपाही –अमृतराय।
5 प्रेमचंद – मदनगोपाल
6 प्रेमचंद : जीवन, कला एवं कृतित्व – हंसराज रहबर।
7 प्रेमचंद : साहित्यिक विवेचन – नंददुलारे वाजपेयी।
8 कथाकार प्रेमचंद – मन्मथनाथ गुप्त।
9 प्रेमचंद : एक अध्ययन – राजेश्वर गुरु।
10 प्रेमचंद की उपन्यास कला – जनार्दन प्रसाद राय।
11 प्रेमचंद एवं भारतीय किसान – रामवक्ष।
12 प्रेमचंद : गंगा प्रसाद विमल।
13 प्रेमचंद के साहित्य सिद्धान्त – नरेन्द्र कोहली।
14 प्रेमचंद : एक कला व्यक्तित्व – जैनेन्द्र।
15 प्रेमचंद स्मृति – सं0 अमृतराय।
16 प्रेमचंद : चिंतन और कला – सं0 इन्द्रनाथ मदान।
17 प्रेमचंद और गोर्की – श्री मधु।
18 हिन्दी उपन्यास : विशेषतः प्रेमचंद : नलिन विलोचन शर्मा।

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

पाठ्य ग्रंथ : 1 शेखर एक जीवनी (भाग 1, 2), 2 आंगन के पार द्वार, 3 अज्ञेय की प्रतिनिधि कहानियाँ।

सहायक ग्रंथ :–

1 अज्ञेय का कथा साहित्य – ओम प्रभाकर।
2 अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्पविधि – सत्यपाल चुघ।
3 अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
4 शिखर से सागर तक – डॉ0 रामकमल राय।
5 अज्ञेय और नयी कविता – डॉ0 चन्द्रकला त्रिपाठी।
6 अज्ञेय की काव्य चेतना के आयाम – डॉ0 नवीन चन्द्र लोहनी।
7 अज्ञेय कवि और काव्य – डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद
8 अज्ञेय का कवि कर्म – कृष्णदत्त पालीवाल
9 अज्ञेय का काव्य भाव और शिल्प – डॉ0 शंकर बसंत मुद्गल
10 आज के लोकप्रिय कवि अज्ञेय – विद्यानिवास मिश्र
11 अज्ञेय एक अध्ययन – भोला भाई पटेल
12 अज्ञेय गद्य रचना के विविध आयाम – डॉ0 पुष्पा शर्मा

व्याख्या	–	2 X 7 $^1/_2$	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 X 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 X 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 X 1	=	10 अंक
योग			=	**50 अंक**

नोट 01 :– विशेष चयन के रूप में एक साहित्यकार का साहित्य पढ़ा जाएगा।

02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– विशिष्ट रचनाकार

1 भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य – मैनेजर पाण्डे
2 महाकवि सूरदास – आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी
3 प्रसाद सन्दर्भ – सम्पादक : प्रमिला शर्मा
4 प्रसाद साहित्य : सर्जना के आयाम – सम्पादक : माधुरी सुबोध
5 गोस्वामी तुलसीदास – सम्पादक : रामचन्द्र शुक्ल
6 तुलसीदास – डॉ० माताप्रसाद गुप्त
7 तुलसी और उनका युग – डॉ० राजपति दीक्षित
8 तुलसी सन्दर्भ – डॉ० नगेन्द्र
9 तुलसी – उदय भानु सिंह
10 जयशंकर प्रसाद – नन्द दुलारे वाजपेयी
11 कामायनी का पुर्नमूल्यांकन – रामस्वरूप चतुर्वेदी
12 अज्ञेय कवि और काव्य – राजेन्द्र प्रसाद
13 अज्ञेय की काव्य चेतना के आयाम – प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी
14 अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्प विधि – डॉ० सत्यपाल
15 अज्ञेय का काव्य – भाव एवं शिल्प – डॉ० शंकर बसंत मुद्गल
16 आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि : अज्ञेय – विद्यानिवास मिश्र
17 अज्ञेय : एक अध्ययन – भोला भाई प्रटेल
18 अज्ञेय गद्य रचना के विविध आयाम – डॉ० पुष्पा शर्मा
19 कामायनी रूपक – डॉ० विनय
20 कबीर – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
21 नदी के द्वीप में वैयक्तिक स्वच्छंदतावाद – आशा अरोरा
22 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
23 प्रसाद साहित्य में अतीत चिन्तन – डॉ० धर्मपाल कपूर

<u>सेमेस्टर द्वितीय (पाठ्यक्रम चतुर्थ)</u>

<u>भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा</u> भाषिक

साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मिति है। साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है। भाषा विज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाईयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतरसंबंधों के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाषिक अंतर्दृष्टि देता है अपितु भाषा-विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है। मूल भाषा व्यवस्था पर आरोपित द्वितीयक साहित्यिक व्यवस्था की भाषिक प्रकृति की स्वीकृति, प्राचीन भारतीय एवं अधुनातन पाश्चात्य साहित्य चिंतन में समान रूप से लक्षणीय है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा के साहित्येतर, प्रयोजनमूलक रूपों के अध्ययन में भी भाषा वैज्ञानिक चिंतन का लाभ उतना ही महत्वपूर्ण है। भाषा वैज्ञानिक आधार पर हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरूप, विविधरूपता तथा हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाओं विषयक जानकारी एवं देवनागरी के वैशिष्ट्य, विकास और मानकीकरण का विवरण हिन्दी के अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी है।

इकाई 1

भाषा और भाषा विज्ञान : भाषा की परिभाषा, भाषाविज्ञान : स्वरूप एवं अध्ययन की दिशाएँ, (वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रायोगिक) विश्व के भाषा परिवार।

इकाई 2

स्वन प्रक्रिया : स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएं, वाग्वयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था- खण्ड्य, खंड्येतर, स्वन-नियम।

अर्थविज्ञान : अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, शब्द भेद, अर्थ परिवर्तन, दिशाएं एवं कारण।

इकाई 3

हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ-वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ-पालि, प्राकृत-शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण, द्रविड़ परिवार की भाषाओं का सामान्य परिचय।

हिन्दी का भौगोलिक विस्तार : हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियों का सामान्य परिचय। खड़ीबोली, अवधी और ब्रज की ध्वनि और रूप सम्बन्धी विशेषताएँ।

इकाई 4

हिन्दी का भाषिक स्वरूप : हिन्दी वर्तनी और उच्चारण के सिद्धान्त। हिन्दी शब्द रचना-उपसर्ग, प्रत्यय, समास।

रूपरचना : लिंग, वचन और कारक-व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियारूप।

हिन्दी वाक्य रचना : पदक्रम और अन्विति।

इकाई 5

देवनागरी लिपि : विशेषताएँ और मानकीकरण।

निबंधात्मक प्रश्न/आलोचनात्मक प्रश्न	2 X 15	=	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1	=	10 अंक
योग		=	**50 अंक**

नोट :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अतिलघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम प्रथम)
आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यन्त)

आधुनिक हिन्दी काव्य पुनर्नवा के रूप में नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं। उपेक्षित विषय भी यहाँ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए हैं। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएं, भावनाएं एवं नूतन विचार सारणियाँ इसमें अभिव्यक्त हुई हैं। मुकम्मल मनुष्य इसमें अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रवाहमान आधुनिक हिन्दी काव्य प्रेरणा और ऊर्जा का अजस्र स्रोत है। अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1	मैथिलीशरण गुप्त	-	साकेत का नवम सर्ग
इकाई 2	जयशंकर प्रसाद	-	कामायनी (चिन्ता और आनन्द सर्ग)
इकाई 3	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	-	राम की शक्ति पूजा
इकाई 4	सुमित्रानंदन पन्त	-	नौका विहार, परिवर्तन, मौन निमन्त्रण,
	महादेवी वर्मा	-	'यामा' के प्रारम्भिक पाँच गीत
इकाई 5	द्रुतपाठ - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा नवीन।		

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

1.	व्याख्याएँ	2 x 7 $^1/_2$	=	15 अंक
2.	निबंधात्मक प्रश्न	1x 15	=	15 अंक
3.	लघु उत्तरीय प्रश्न	5 x 2	=	10 अंक
4.	अति लघूत्तरीय प्रश्न	10 x 1	=	10 अंक
		योग	=	50 अंक

नोट 01:- प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।
02 :- निबंधात्मक प्रश्न एवं व्याख्यान इकाई संख्या 01, 02, 03 एवं 04 से पूछी जाएंगी।
03 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम द्वितीय)

भारतीय काव्यशास्त्र

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्‌घाटन के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविकता परखी जा सके। सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता से समझने और जानने-परखने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन समीचीन है। वहीं पाश्चात्य काव्य शास्त्र का अध्ययन भी आवश्यक है।

इकाई 1 :- काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन।
अलंकार की अवधारणा, अलंकार सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।
रीति की अवधारणा, रीति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

इकाई 2 :- रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण।
वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

इकाई 3 :- ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।
औचित्य की अवधारणा, औचित्य सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

इकाई 4 :- **प्लेटो** - काव्य सिद्धान्त।
अरस्तू –अनुकरण सिद्धान्त, विरेचन सिद्धान्त।
लोंजाइनस –उदात्त की अवधारणा।

इकाई 5 :- **आई0ए0 रिचर्डस** - संवेगों का सन्तुलन।
क्रोचे –अभिव्यंजनावाद।
टी0एस0 इलियट -निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त।

निबंधात्मक प्रश्न	2 x 15	=	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 x 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1	=	10 अंक
योग		=	50 अंक

नोट :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम तृतीय)

पत्रकारिता प्रशिक्षण

पत्रकारिता आज जीवन-समाज की धड़कन बन गई है। सिमटते विश्व में स्नायु-तंतुओं के समान काम कर रही है। दैनिक समाचार पत्र से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक पत्रिकाओं, प्रिंट मिडिया, इलैक्ट्रॉनिक मिडिया, इंटरनेट आदि में इसका विकसित स्वरूप देखा जा सकता है। इसके बिना आज आदमी का रहना कठिन है। साहित्यिकता के साथ-साथ रोजगारपरकता की आकांक्षा की पूर्ति भी इससे होती है। पुनर्जागरण, स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व, नारी तथा दलित जागरण में इसकी क्रांतिकारी भूमिका रही है। अतः इसका अध्ययन आज की अनिवार्यता बन जाती है।

इकाई 1 **प्रिन्ट पत्रकारिता**

पत्रकारिता का स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार,

हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास।

समाचार के मूल तत्व, समाचार के विभिन्न स्रोत।

संपादन कला के सामान्य सिद्धांतः शीर्षकीकरण, पृष्ठ विन्यास, आमुख और समाचार प्रस्तुतीकरण।

दृश्य सामग्री-कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स की व्यवस्था एवं फोटो पत्रकारिता।

इकाई 2

पत्रकारिता से संबंधित लेखन : संपादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, पुस्तक समीक्षा, खोजी पत्रकारिता।

इकाई 3 **इलैक्ट्रॉनिक पत्रकारिता**

इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का उद्‌भव एवं विकास

इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता :-

1. रेडिया की पत्रकारिता :- समाचार बुलेटिन सम्बन्धी सिद्धान्त, उनकी तकनीक, रेडियो बुलेटिनों के प्रकार।

2. टेलीविजन में समाचार संकलन, संपादन, प्रस्तुतीकरण।

3 इण्टरनेट की पत्रकारिता

इकाई 4

समाचार संकलन तकनीक :- 1. साक्षात्कार, 2. प्रेसवार्ता, 3. संसदीय रिपोर्टिंग, 4. विधि समाचार, 5. खेल समाचार, 6. भाषणों, बैठकों संगोष्ठियों आदि के समाचार तथा प्रेस विज्ञप्तियाँ 7. दुर्घटनाओं, आपदाओं, अपराधों की रिपोर्टिंग, खोजी पत्रकारिता, 8. एंकरिंग तकनीक

इकाई 5

रेडियो एवं टेलीविजन की तकनीक एवं उपकरण :-

1. माइक्रोफोन, रिकार्डर, मिक्सर, विडियो, कैमरा, प्रकाश संबंधी यंत्र/एनीमेशन और मल्टीमीडिया

निबंधात्मक प्रश्न	2 x 15 =	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 x 2 =	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 =	10 अंक
कुल योग	=	50 अंक

नोट :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सेमेस्टर तृतीय (पाठ्यक्रम चतुर्थ)
प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी

आवश्यक निर्देश -

⇨ चतुर्थ प्रश्नपत्र प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी का है। इस प्रश्नपत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी कम से कम 10 पृष्ठों का एक आलेख विभाग में प्रस्तुत करेगा। जिसकी विषयवस्तु निम्नांकित में से किसी एक पर केन्द्रित होगी।

⇨ तीन सेमेस्टर के चारों प्रश्नपत्रों के किसी भी विषय/साहित्यकार/उनकी रचना पर विशद् समीक्षा।

⇨ साहित्यिक पुस्तकों/शोध पत्र-पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख।

⇨ साहित्यिक गतिविधियों/साहित्यिक संस्थाओं की गतिविधियों पर आलेख।

⇨ प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रयोग/भाषा विज्ञान एवं राजभाषा के प्रयोग पर आलेख।

⇨ पत्रकारिता संबंधी विषयों में प्रयोग/शब्दकोश निर्माण संबंधी प्रयोग।

⇨ अनुवाद संबंधी प्रयोग पर आलेख।

⇨ साहित्यिक एवं आलोचनात्मक पत्रिकाओं पर समीक्षात्मक आलेख।

⇨ इस प्रयोगात्मक प्रश्नपत्र का मूल्यांकन आन्तरिक तथा बाह्य परीक्षक द्वारा किया जाएगा और प्रायोगिकी संबंधी प्रश्न भी छात्र-छात्राओं से पूछे जाएंगे। विषय का निर्धारण समयावधि को देखते हुए संबंधित आन्तरिक शिक्षक द्वारा किया जाएगा और समय सारणी में इसके लिए भी समय का अन्य प्रश्नपत्रों की भांति निर्धारण होगा और अनिवार्यतः तत्संबंधित विषय पर कक्षाएं कराई जाएंगी।

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम प्रथम)

छायावादोत्तर काव्य

छायावादी कृतित्व में यथार्थ और स्वप्न दोनों की समान स्थिति थी। राष्ट्रीय-चेतना और सांस्कृतिक जागरण की प्रवृत्ति अपनी समस्त शक्ति-सामर्थ्य तथा कतिपय नवीन प्रयोगवादिता के साथ छायावादोत्तर-काव्य में विकसित होती रही। यहाँ प्रयोग और प्रगतिशीलता के स्वर जोर पकड़ते गए जिसके बीज-बिन्दु छायावाद में पड़ चुके थे। औद्योगीकरण के साथ-साथ शोषण की वृत्ति तथा अन्य सामाजिक विद्रूपताओं ने प्रगतिशील साहित्यांदोलनों को बढ़ावा दिया। नये मार्ग की अन्वेषी विचारधारा ने प्रयोगवादी काव्यधारा के रूप में अपने को विकसित किया। स्वतंत्रता के बाद मोहभंग की स्थिति ने जन्म लिया। स्वप्न अधूरे रहे, संकल्प टूटे, आक्रोष और विद्रोह की प्रवृत्ति व्यापक पैमाने पर परिलक्षित हुई। विज्ञान ने बौद्धिकता का विकास किया, फलस्वरूप नये-नये बिंब, प्रतीक एवं अभिव्यंजना-रूप विकसित हुए। अंतर्विरोधी स्थितियों ने मूल्य-विघटन, तनाव-संक्रमण, मोहभंग की स्थिति पैदा की, जिसकी अभिव्यंजना विविध रूपों में हुई। वर्तमान समस्याओं, संवेदनाओं की व्यापकता विश्वजनीन हो गई है। इस वैश्विक-संदर्भ की जानकारी और समझदारी के लिए छायावादोत्तर तथा समकालीन साहित्य का विशेष अध्ययन परमावश्यक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1

छायावादोत्तर काव्य की विभिन्न विचारधाराएं :- राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का काव्य, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता, नवगीत, अकविता, उत्तर आधुनिकतावाद

इकाई 2 प्रमुख कवि तथा उनकी काव्य प्रवृत्तियाँ।

इकाई 3 अज्ञेय - असाध्य वीणा, कलगी बाजरे की, नदी के द्वीप, बावरा अहेरी।
मुक्तिबोध - अंधेरे में।

इकाई 4 नागार्जुन - कालिदास, बहुत दिनों के बाद, अकाल और उसके बाद।
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - कुआनो नदी, जंगल का दर्द, एक सूनी नाव, बांस का पुल।

इकाई 5 द्रुतपाठ :-

रघुवीर सहाय, 'धूमिल', दुष्यन्त कुमार, धर्मवीर भारती, लीलाधर जगूड़ी, कुँअर बेचैन।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्याएँ	-	2 x 7 $^{1}/_{2}$	=	15 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 x 15	=	15 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 x 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 x 1	=	10 अंक
योग	-			50 अंक

नोट 01 :- व्याख्याएं इकाई 03 एवं 04 से पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न इकाई संख्या 01 से 04 तक पूछे जाएंगे।
02 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।
03 :- प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार में से दो व्याख्या करनी होंगी।

सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम द्वितीय)
हिन्दी आलोचना

हिन्दी साहित्य की कुछ विधाएँ इतनी विकसित हो गयी हैं कि उनके स्वतंत्र सघन अध्ययन के लिए पृथक वैकल्पिक प्रश्नपत्र की आवश्यकता है। हिन्दी आलोचना ऐसी ही एक विधा है। इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करके विद्यार्थी सफल आलोचक हो सकता है, जो हिन्दी पठन-पाठन का मूल प्रायोजन है।

इकाई 1

हिन्दी आलोचना का स्वरूप और विकास

इकाई 2

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की साहित्यिक मान्यताएँ

इकाई 3

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की साहित्यिक मान्यताएँ

इकाई 4

रामधारी सिंह दिनकर और अज्ञेय की साहित्यिक मान्यताएं

इकाई 5

द्रुतपाठ- महावीर प्रसाद द्विवेदी, नगेन्द्र, विजयदेव नारायण शाही, नंद दुलारे वाजपेयी, गजानन, माधव मुक्तिबोध। द्रुतपाठ हेतु चयनित रचनाकारों में से केवल लघु उत्तरीय प्रश्न ही पूछे जाएंगे।

निबंधात्मक/आलोचनात्मक प्रश्न	2 X 15	=	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 2	=	10 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 1	=	10 अंक
योग		=	**50 अंक**

नोट 01 :- इकाई 01 से 04 तक निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

02 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

<u>**सेमेस्टर चतुर्थ (पाठ्यक्रम तृतीय (ड))**</u>

<u>**लघुशोध प्रबन्ध**</u>

पूर्णांक 100 अंक

(संस्थागत छात्रों के लिए)

आवश्यक निर्देश -

छात्र/छात्रा विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक के सहयोग एवं अनुमति से लघु शोध प्रबन्ध के विषय का चयन करेगा/करेगी। लघु शोध प्रबन्ध लगभग 50 पृष्ठों का होना चाहिए। लघु शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन आन्तरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा होगा।

प्रबन्ध लेखन	- 50 अंक
मौखिकी	- 50 अंक